IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

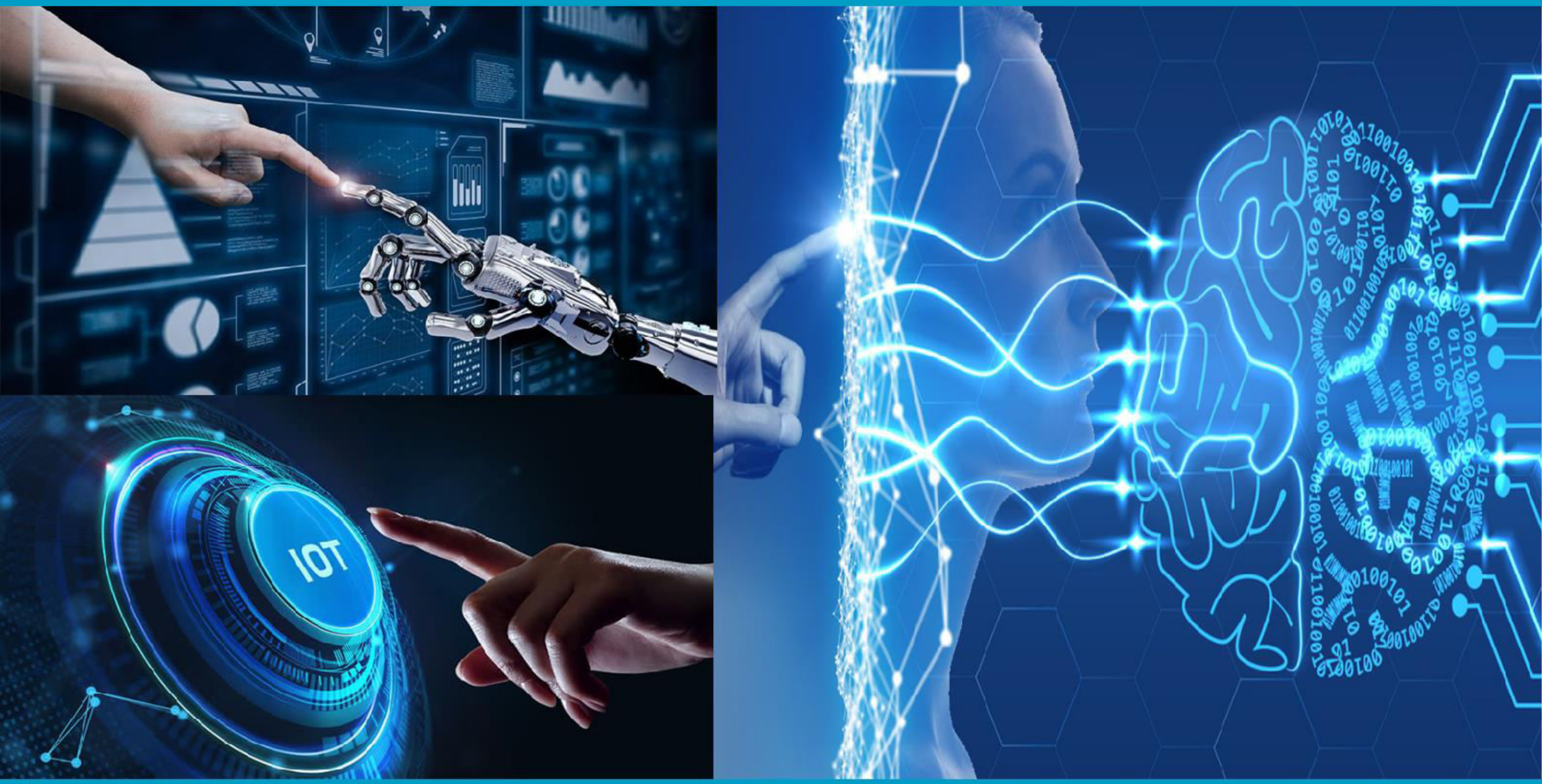

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 9, Issue 12, December 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

+91 99405 72462 +9163819 07438 ijmrsetm@gmail.com www.ijmrsetm.com

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

मानव जीवन में संस्कृत का महत्व

Dr.Urmila Devi

Principal, Shri Krishna Mahavidyalaya, Jaluki Nagar, Deeg, Rajasthan, India

सार

संस्कृत (संस्कृतम्) भारतीय उपमहाद्वीप की एक भाषा है। संस्कृत एक हिंद-आर्य भाषा है जो हिंद-यूरोपीय भाषा परिवार की एक शाखा है।[5] आधुनिक भारतीय भाषाएँ जैसे, हिंदी, बांग्ला, मराठी, सिन्धी, पंजाबी, नेपाली, आदि इसी से उत्पन्न हुई हैं। इन सभी भाषाओं में यूरोपीय बंजारों की रोमानी भाषा भी शामिल है। संस्कृत में वैदिक धर्म से संबंधित लगभग सभी धर्मग्रंथ लिखे गए हैं। बौद्ध धर्म (विशेषकर महायान) तथा जैन मत के भी कई महत्त्वपूर्ण ग्रंथ संस्कृत में लिखे गए हैं। आज भी हिंदू धर्म के अधिकतर यज्ञ और पूजा संस्कृत में ही होती हैं। संस्कृत आमतौर पर कई पुरानी इंडो-आर्यन किस्मों को जोड़ती है। इनमें से सबसे पुरातन ऋग्वेद में पाया जाने वाला वैदिक संस्कृत है, जो 3000 ईसा पूर्व और 2000 ईसा पूर्व के बीच रचित 1,028 भजनों का एक संग्रह है, जो इंडो-आर्यन जनजातियों द्वारा आज के उत्तरी अफगानिस्तान और उत्तरी भारत में अफगानिस्तान से पूर्व की ओर पलायन करते हैं। वैदिक संस्कृत ने उपमहाद्वीप की प्राचीन प्राचीन भाषाओं के साथ बातचीत की, नए पौधों और जानवरों के नामों को अवशोषित किया।

भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में संस्कृत को भी सम्मिलित किया गया है। यह उत्तराखण्ड और हिमाचल प्रदेश की आधिकारिक राजभाषा है। आकाशवाणी और दूरदर्शन से संस्कृत में समाचार प्रसारित किए जाते हैं। कतिपय वर्षों से डी. डी. न्यूज (DD News) द्वारा वार्तावली नामक अर्धहोरावधि का संस्कृत-कार्यक्रम भी प्रसारित किया जा रहा है, जो हिन्दी चलचित्र गीतों के संस्कृतानुवाद, सरल-संस्कृत-शिक्षण, संस्कृत-वार्ता और महापुरुषों की संस्कृत जीवनवृत्तियों, सुभाषित-रत्नों आदि के कारण अनुदिन लोकप्रियता को प्राप्त हो रहा है।

परिचय

- संस्कृत कई भारतीय भाषाओं की जननी है। इनकी अधिकांश शब्दावली या तो संस्कृत से ली गई है या संस्कृत से प्रभावित है। पूरे भारत में संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन से भारतीय भाषाओं में अधिकाधिक एकरूपता आएगी जिससे भारतीय एकता बलवती होगी। यदि इच्छा-शक्ति हो तो संस्कृत को हिब्रू की भाँति पुनः प्रचलित भाषा भी बनाया जा सकता है।
- हिन्दू, बौद्ध, जैन आदि धर्मों के प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ संस्कृत में हैं।
- हिन्दुओं के सभी पूजा-पाठ और धार्मिक संस्कार की भाषा संस्कृत ही है।
- हिन्दुओं, बौद्धों और जैनों के नाम भी संस्कृत पर आधारित होते हैं।[1,2,3]
- भारतीय भाषाओं की तकनीकी शब्दावली भी संस्कृत से ही व्युत्पन्न की जाती है। भारतीय संविधान की धारा 343, धारा 348 (2) तथा 351 का सारांश यह है कि देवनागरी लिपि में लिखी और मूलत: संस्कृत से अपनी पारिभाषिक शब्दावली को लेने वाली हिन्दी राजभाषा है।
- संस्कृत, भारत को एकता के सूत्र में बाँधती है।
- संस्कृत का साहित्य अत्यन्त प्राचीन, विशाल और विविधतापूर्ण है। इसमें अध्यात्म, दर्शन, ज्ञान-विज्ञान और साहित्य का खजाना है। इसके अध्ययन से ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति को बढ़ावा मिलेगा।
- संस्कृत को कम्प्यूटर के लिए (कृत्रिम बुद्धि के लिए) सबसे उपयुक्त भाषा माना जाता है।[11]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

संस्कृत भाषा के शब्द मूलत रूप से सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं में हैं। सभी भारतीय भाषाओं में एकता की रक्षा संस्कृत के माध्यम से ही हो सकती है। मलयालम, कन्नड और तेलुगु आदि दक्षिणात्य भाषाएं संस्कृत से बहुत प्रभावित हैं। यहाँ तक कि तमिल में भी संस्कृत के हजारों शब्द भरे पड़े हैं और मध्यकाल में संस्कृत का तमिल पर गहरा प्रभव पड़ा।[12]

विश्व की अनेकानेक भाषाओं पर संस्कृत ने गहरा प्रभाव डाला है।[13] संस्कृत भारोपीय भाषा परिवर में आती है और इस परिवार की भाषाओं से भी संस्कृत में बहुत सी समानता है। वैदिक संस्कृत और अवेस्ता (प्राचीन इरानी) में बहुत समानता है। भारत के पड़ोसी देशों की भाषाएँ सिंहल, नेपाली, म्यांमार भाषा, थाई भाषा, ख्मेर[14] संस्कृत से प्रभावित हैं। बौद्ध धर्म का चीन ज्यों-ज्यों प्रसार हुआ वैसे वैसे पहली शताब्दी से दसवीं शताब्दी तक सैकड़ों संस्कृत ग्रन्थों का चीनी भाषा में अनुवाद हुआ। इससे संस्कृत के हजरों शब्द चीनी भाषा में गए।[15] उत्तरी-पश्चिमी तिब्बत में तो अज से १००० वर्ष पहले तक संस्कृत की संस्कृति थी और वहाँ गान्धारी भाषा का प्रचलन था। [16]

विचार-विमर्श

देश, काल और विविधता की दृष्टि से संस्कृत साहित्य अत्यन्त विशाल है। इसे मुख्यतः दो भागों में विभाजित किया जाता है- वैदिक साहित्य तथा शास्त्रीय साहित्य । आज से तीन-चार हजार वर्ष पहले रचित वैदिक साहित्य उपलब्ध होता है।[5,7,8]

संस्कृत ग्रन्थ

परम्परा	संस्कृत ग्रन्थ, विधा श्रेणी	उदाहरण
हिन्दू	धर्मग्रन्थ	वेद, उपनिषद, आगम, भागवद्गीता
	भाषा, व्याकरण	अष्टाध्यायी, गणपाठ, पदपाठ, वार्त्तिक, महाभाष्य, वाक्यपदीय, फिट-सूत्र
	सामान्य नियम एवं धार्मिक नियम	धर्मसूत्र/धर्मशास्त्र,[a] मनुस्मृति
	राजनीति, राजशास्त्र	अर्थशास्त्र
	कालगणना, गणित, तर्क	कल्प, ज्योतिष, गणितशास्त्र, शुल्बसूत्र, सिद्धान्त, आर्यभटीय, दशगीतिकासूत्र, सिद्धान्तशिरोमणि, गणितसारसङ्ग्रह, बीजगणितम् [b]
	आयुर्विज्ञान, आयुर्वेद, स्वास्थ्य	आयुर्वेद, सुश्रुतसंहिता, चरकसंहिता
	कामशास्त्र	कामसूत्र, पञ्चसायक, रतिरहस्य, रतिमञ्जरी, अनङ्गरङ्ग, समयमातृका
	महाकाव्य	रामायण, महाभारत
	राजवंशीय काव्य	रघुवंश, कुमारसम्भव
	सुभाषित एवं शिक्षाप्रद साहित्य	सुभाषित, नीतिशतक, बोधिचर्यावतार, शृंगार-ज्ञान-निर्णय, कलाविलास, चतुर्वर्गसङ्ग्रह, नीतिमञ्जरी, मुग्धोपदेश, सुभाषितरत्नसन्दोह, योगशास्त्र, शृंगार-वैराग्य-तरङ्गिणी
	नाटक, नृत्य तथा अन्य कलाएँ	नाट्यशास्त्र
	संगीत	संगीतशास्त्र, संगीतरत्नाकर, संगीत पारिजात
	काव्यशास्त्र	काव्यशास्त्र
	मिथक	पुराण
	रहस्यमय अटकलें, दर्शन	दर्शन, सांख्य, योग, न्याय, वैशेशिक, मीमांसा, वेदान्त वैष्णव, शैव, शाक्त, स्मार्त, आदि
	कृषि एवं भोजन	कृषिशास्त्र, वृक्षायुर्वेद
	डिजाइन, शिल्प, वास्तुशास्त्र	शिल्पशास्त्र, समराङ्गणसूत्रधार

	मन्दिर, मूर्तिकला	बृहत्संहिता,
	संस्कार	गृह्यसूत्र
बौद्ध धर्म	धर्मग्रन्थ, मठ-सम्बन्धी नियम	त्रिपिटक,[c] महायान सम्प्रदाय के ग्रन्थ, अन्य
जैन धर्म	धर्मशास्त्र, दर्शन	तत्त्वार्थ सूत्र, महापुराण एवं अन्य

इनके अतिरिक्त रसविद्या, तंत्र साहित्य, वैमानिक शास्त्र तथा अन्यान्य विषयों पर संस्कृत में ग्रन्थ रचे गये जिनमें से कुछ आज भी उपलब्ध हैं।

भारत के संविधान में संस्कृत आठवीं अनुसूची में सम्मिलित अन्य भाषाओं के साथ विराजमान है। त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत संस्कृत भी आती है। हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की की वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली संस्कृत से निर्मित है।[9,10,11]

भारत तथा अन्य देशों के कुछ संस्कृत विश्वविद्यालयों की सूची नीचे दी गयी है-

स्थापना वर्ष	नाम	स्थान
1791	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय	वाराणसी
1876	सद्विद्या पाठशाला	मैसूर
1961	कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय	दरभंगा
1962	राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति	तिरुपति
1962	श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ	नयी दिल्ली
1970	राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली	नयी दिल्ली
1981	श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय	पुरी
1986	नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय	नेपाल
1993	श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय	कालडी
1997	कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय	रामटेक
2001	जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय	जयपुर
2005	श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय	वेरावल
2008	महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय	उज्जैन
2011	कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय	बंगलुरु

संस्कृत परम चेतना के तल से उतरी हुई भाषा है। स्वयंभू भाषा है। सत्य जब मानव चेतना से अभिव्यक्ति पाता है तो वह अपनी भाषा के साथ उतरता है। इसलिए संस्कृत सतयुग की भाषा है।
उन्होंने बताया कि भाषा के रूप में संस्कृत शब्द का प्रयोग पाणिनि ने किया। इससे पूर्व भाषा का स्वरूप छंद और लौकिक भाषा के रूप में था। पाणिनि के व्याकरण से लेकर। पाणिनि के व्याकरण की कमियों को कात्यायन द्वारा पूरा किया जाना। इन सब तथ्यों को विस्तार से बताया।[12,13,15]

संस्कृत भाषा के प्रति पश्चिम के रूख पर बातचीत करते हुए कहा कि पश्चिम अध्यात्म में डूबकर ही संस्कृत को समझ सकता है। संस्कृत के एक एक शब्द के अर्थों में अर्थ छुपे हैं।
उन्होंने इस बात पर बल दिया कि इस समय संस्कृत को जन जन की भाषा बनाने के लिए बाल साहित्य संस्कृत के सरलीकरण व निर्माण की आवश्यकता है। जिस पर बहुत काम किया जा रहा है। बच्चों के आन्तरिक विकास का आधार है संस्कृत।
मानव जीवन में चेतना के शिखर 'अहम ब्रह्मास्मि' की राह दिखाने की क्षमता केवल संस्कृत में ही है।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

परिणाम

संस्कृत भाषा संसार की प्राचीनतम एवं प्रथम भाषा है। इस भाषा में ही सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने वेदों का ज्ञान दिया था। हमने एक लेख में यह विचार किया था कि क्या ईश्वर के अपने निज प्रयोग की भी क्या कोई भाषा है?इसके समाधान में हमारा निष्कर्ष यह था कि ईश्वर भी अपने कार्यों को सम्पादित करने में किसी न किसी भाषा का प्रयोग करता है और वह भाषा वेदों की भाषा "वैदिक-अलौकिक संस्कृत" ही हो सकती है जिसका दिग्दर्शन वेदों के अध्ययन करने पर होता है। वेदों की भाषा ईश्वर की अपनी भाषा है जिसमें उसने मनुष्य आदि की तिब्बत में सृष्टि कर उन्हें चार वेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद का ज्ञान स्व-निर्दिष्ट नाम वाले अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को दिया था। महर्षि दयानन्द ने इस प्रश्न कि चार ऋषियों को वेदों का ज्ञान अर्थात् इनकी भाषा व शब्द-अर्थ-सम्बन्ध आदि का ज्ञान उन ऋषियों को किसने कराया? इसका तर्क व प्रमाण युक्त उत्तर महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में यह कह कर दिया है कि ईश्वर ने ही उन चारों ऋषियों को वेदों मे मन्त्रों के अर्थ जनाये। माता-पिता सन्तान को जन्म देते हैं। जन्म के समय बच्चे का शरीर व इसकी इन्द्रियां भाषा समझने, सीखने व बोलने में समर्थ नहीं होतीं। इनकी स्थिति के अनुसार माता-पिता बच्चे को गोद में लेकर उन्हीं के स्तर के अनुसार अपनी भाषा के शब्द व लोरियां आदि बोलकर धीरे-धीरे ज्ञान कराते हैं। कुछ ही दिनों में वह अपने माता-पिता की आवाज व उनके शब्दों को समझने लगता है व उन पर अपनी सकारात्मक प्रतिक्रिया अपने व्यवहार व हाव-भाव से देता है। यह क्रम चलता है और बच्चा अपनी माता की भाषा को समझने लगता है और जब उसकी वाक् इन्द्रिय 6 माह व उसके बाद कुछ बोलने के योग्य हो जाती है तो वह शब्दोच्चार भी आरम्भ कर देता है। समय के साथ उसकी भाषा में सुधार होता रहता है। 3 से 5 या 7 वर्ष की वय में उसकी यह स्थिति हो जाती है कि अब उसे किसी भी भाषा का ज्ञान यदि कराया जाये तो वह धीरे-धीरे सीख जाता है, वह चाहे हिन्दी हो, अंग्रेजी हो, संस्कृत हो या फिर संसार व किसी देश की अन्य कोई सी भी भाषा।[15,17,18] संस्कृत ऐतिहासिकता की दृष्टि से संसार की सभी भाषाओं की जननी है। इस प्रकार से वेदों की संस्कृत संसार के सब मनुष्यों के सभी प्राचीन ऋषियों व पूर्वजों की मातृ भाषा थी और ईश्वर ही प्रथम पीढ़ी व बाद के सभी मनुष्यों को भाषा व वेदों का ज्ञान देने वाली माता सिद्ध होती है। संस्कृत का महत्व इस कारण भी है कि इसके ज्ञान से सृष्टि के आरम्भ में, जो कि लगभग 2 अरब वर्ष पूर्व अस्तित्व में आई, उस समय व उसके बाद के संसार के लोगों के आचार-विचार, धर्म व संस्कृति पर प्रकाश पड़ता है। यद्यपि वेदों में इतिहास न होकर शुद्ध ज्ञान व विज्ञान का ही भण्डार है जिसे हमारे वेदज्ञानी ऋषि ज्ञान-कर्म-उपासना में वर्गीकृत करते हैं। इस स्थिति में भी यह तो ज्ञात होता ही है कि महाभारत काल से पूर्व घटने वाली ऐतिहासकि घटनायें वैदिक विचारधारा और विपरीत विचारों के लोगों का द्वन्द हुआ करता रहा होगा। संसार में सदा से ही अच्छाई व बुराई दो प्रकार की विचारधारायें रही हैं। दोनों में समय-समय पर संघर्ष होता आया है और अन्तोगत्वा सत्य की विजय तथा असत्य की पराजय होती आई है। रामायण व महाभारत का अध्ययन कर यही अनुभव हमें होता है। आज भी यदि हम अपने धर्म व कर्तव्यों के क्षेत्र में सत्य की खोज करें और सत्य को ग्रहण करें व असत्य का त्याग कर दें तो इससे मानव जाति का अनन्य उपकार व कल्याण हो सकता है। यदि सत्य के प्रति उपेक्षा का भाव रखेंगे, जैसा कि आजकल दिखाई देता है, तो इससे सभी का कल्याण नहीं हो सकता है। आजकल सत्य का सर्वत्र व्यवहार न होने के कारण अशान्ति व दुःख का वातावरण विद्यमान है। इस समस्या का हल केवल व केवल वेदों का सत्य ज्ञान प्राप्त कर उसके अनुसार समाज की संरचना का गुण-कर्म व स्वभाव के अनुसार सुधार करना ही है। कोई अन्य मार्ग मानवजाति के कल्याण नहीं है। यही कार्य महर्षि दयानन्द ने अपने समय में मनसा-वाचा-कर्मणा किया था। इस कारण से संस्कृत का संरक्षण, संवर्धन, प्रचार और प्रसार अति आवश्यक है। यह संसार के प्रत्येक मनुष्य का नैतिक व मुख्य कर्तव्य भी है। आज संसार में अनेकानेक भाषायें हैं। संसार के लोग अपनी-अपनी पसन्द की भाषा का प्रयोग करते हैं। इससे उन्हें अपनी बात दूसरों को बताने व समझाने में आसानी होती है व दूसरों की बातें समझने में भी लाभ होता है। यदि दो भिन्न-भिन्न भाषा वाले व्यक्ति परस्पर बात करना चाहें और अपनी-अपनी भाषा बोलें तो दोनों को ही एक-दूसरे को समझना सम्भव नहीं होता। दोनों में से एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति की भाषा आनी चाहिये तभी, उस एक दूसरे को समझ में आने वाली भाषा का प्रयोग करने पर, परस्पर व्यवहार किया जा सकता है। अब यदि एक यूनिवर्सल वा वैश्विक सम्पर्क भाषा की बात करें और सबको स्वीकार करने को कहा जाये तो सब अपनी ही भाषा को वैश्विक भाषा बनाना चाहेंगे और इससे सबको स्वीकार्य हल सम्भव नहीं होगा। एक स्थिति ऐसी बनती है कि हम एक भाषा पर सबको सहमत करा सकते हैं और वह भाषा है संस्कृत।[19,20,21] इस भाषा के पक्ष में सबसे प्रबल तर्क यह है कि यह संसार की सबसे प्रथम व प्राचीनतम भाषा होने के कारण हम सब के पूर्वजों की भाषा रही है। पूर्वजों की धरोहर की रक्षा व उसका संवर्धन व प्रचार-प्रसार उनकी सन्ततियों व भावी पीढ़ीयों का मुख्य कर्तव्य होता है। यदि वह ऐसा न करें तो वह उनकी योग्य उत्तराधिकारी न कहलाकर प्रमादी व कुलघाती कहलाती हैं। इस तर्क को लागू करने पर जो भी व्यक्ति संस्कृत भाषा का विरोध करेगा तो वह अपने पूर्वजों से द्रोह करने वाला ही सिद्ध होगा। ऐसा शायद कोई भी शिक्षित व समझदार व्यक्ति स्वयं के लिए कहलाना नहीं चाहेगा। अतः संसार में सभी लोगों की कोई एक सम्पर्क भाषा यदि हो सकती है तो वह योग्यता भी आज केवल संस्कृत भाषा में ही है। अतः आवश्यकता है कि संस्कृत का उन्ननय संस्कृत प्रेमियों को इसका प्रयोग, प्रचार-प्रसार, पठन-पाठन, पुस्तक लेखन आदि करके करना चाहिये। हम तो यह भी अनुभव करते हैं कि संसार के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी मातृ भाषा के अतिरिक्त दूसरी भाषा के रूप में संस्कृत सीखनी चाहिये और इसे सीख कर स्वयं संस्कृत शिक्षक बनकर इसका प्रचारक व प्रसारक बन कर अपने पूर्वजों के मार्ग का अनुगमन कर उनका सच्चा अधिकारी स्वयं को सिद्ध करना चाहिये।[22,23] हमारे देश में रामराज्य की बात कही जाती है।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

रामराज्य क्या हैं? ऐसा राज्य कि जहां सबको उन्नति के समान अवसर प्रदान हों, किसी के साथ पक्षपात व शोषण न हो, कोई अभाव ग्रस्त न हो, कोई अस्वस्थ व अल्पायु न हो, कोई अज्ञानी, कंजूस, सेवाभाव विहीन न हो। सभी ज्ञानी, वेदानुगामी, सत्यानुगामी, न्यायपूर्ण व्यवहार करने वाले, स्त्री-शूद्र-निर्धन-रोगी-अशिक्षित आदि को अपना सहोदर भाई के समान प्रेम करने वालें हो। सभी अपने मिथ्याविश्वासों को दूर कर एक सत्य धर्म व संस्कृति के अनुयायी हों, सब देशों के निवासी अपने व दूसरे देश वालों को अपने मित्र व भाई की दृष्टि से देखें व सुख-दुःख में मिलकर सहयोग करने वाले हों। इस लक्ष्य की प्राप्ति में भी संस्कृत सहयोग कर सकती है। संसार में महाभारत काल तक के 2 अरब वर्षों में सारे संसार के लोगों का केवल एक मत व धर्म था जो कि वेदों पर आधारित एवं प्रचलित था। संस्कृत का जब सभी अध्ययन करेंगे तो इससे संस्कृत भाषा एवं इसके वेदादि साहित्य के अनुरूप सभी के हृदय के भावों की एकता स्थापित होगी और अज्ञान व मिथ्याविश्वास अनायास समाप्त हो सकते हैं। इस प्रकार के रामराज्य का लक्ष्य भी संस्कृत के द्वारा प्राप्त किया संस्कृत के प्रचार प्रसार का कार्य संस्कृत के जानकारों व संस्कृत से प्रेम करने वालों को करना है। समय-समय पर देश-देशान्तर में विश्व संस्कृत सम्मेलन आदि आयोजित होते रहते हैं परन्तु ऐसा लगता है कि संस्कृत के प्रचार-प्रसार व क्रियान्वयन में कहीं न कहीं त्रुटियां व न्यूनतायें हैं। इन्हें दूर कर समर्पण भाव से कार्य करने से सफलता मिलेगी। आईयें, संस्कृत अध्ययन का व्रत लें। अध्ययन पूरा कर संस्कृत के प्रचार-प्रसार में सर्वात्मा प्रचार-प्रसार कर ईश्वर प्रदात्त भाषा को उसका उचित स्थान दिलाने में अपने कर्तव्य का निर्धारण कर उसका पालन करें और इस परोपकारी कार्य के लिए ईश्वर के कृपापात्र बनें। आर्यसमाज द्वारा देश भर में चलाये जा रहे गुरूकुलइस कार्य की सफलता में विशेष सहयोगी हो सकते हैं।[23]

निष्कर्ष

विद्यार्थियों के लिए-

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः ।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ॥

यथा ह्येकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत् ।
एवं परुषकारेण विना दैवं न सिद्ध्यति ॥

अर्थात् :– जिस प्रकार एक पहिये से रथ नहीं चल सकता है, उसी प्रकार बिना पुरुषार्थ के भाग्य सिद्ध नहीं हो सकता है । अतः भाग्य के भरोसे सब कुछ छोड़कर मत बैठिये लक्ष्य की प्राप्ति हेतु पुरुषार्थ करते रहिये ।

पुस्तकस्था तु या विद्या ,परहस्तगतं च धनम् ।
कार्यकाले समुत्तपन्ने न सा विद्या न तद्धनं ॥

अर्थात् :– पुस्तक में रखी विद्या ज्ञान की बातें तथा दूसरे के हाथ में गया धन... ये दोनों जब बहुत आवश्यकता हो जरूरत हो, उस वक्त काम नहीं आता. अतः एक जागरूक व्यक्ति को इस बात को हमेशा ध्यान में रख कर ही आचरण करना चाहिए।

उद्यमेनैव हि सिध्यन्ति,कार्याणि न मनोरथै:।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य,प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥

अर्थात् :– जैसे सोते हुए सिंह के मुख में मृग स्वयं प्रवेश कर के उसकी क्षुधातुष्टि नहीं करता । उसी प्रकार सारे अभीष्ट कार्य उद्यम अर्थात प्रयत्न करने से ही पूर्ण होते हैं न कि उन्हें संपन्न कर लेने की इच्छा मात्रा से मनोरथ मात्र से ...[20,21,22]

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम् ।
वृणते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः ॥

अर्थात् :– अचानक आवेश में आ कर बिना सोच विचार किये कोई कार्य नहीं करना चाहिए, क्योंकि विवेकशून्यता सबसे बड़ी विपत्तियों का घर होती है। इसके उलट जो व्यक्ति सोच –समझकर कार्य करता है, उसके इसी गुण की वजह से माता लक्ष्मी का आशीर्वाद उन्हें स्वतः प्राप्त हो जाता है अर्थात धन सम्पदा स्वतः उनकी ओर आकृष्ट होने लगती है ।

सुखार्थिनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतः सुखम् ।
सुखार्थी वा त्यजेत विद्या विद्यार्थी व त्यजेत् सुखम् ॥

अर्थात् :-सुख की कामना करने वालों को विद्या कहां प्राप्त हो सकती है ? और विद्या की इच्छा रखने वाले को सुख नहीं मिल सकता. अतः सुख की लालसा रखने वालों को विद्या अध्ययन को त्याग देना चाहिए, तथा जो वास्तव में विद्या प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें सुख का परित्याग कर देना चाहिए।

Sanskrit Shlokas for Better Life.

प्रियवाक्य प्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः ।
तस्मात तदैव वक्तव्यम वचने का दरिद्रता ॥

अर्थात् :– प्रिय अर्थात मधुर वचन से सभी जीवों को प्रसन्नता होती है,फिर मधुर वचन बोलने में कंजूसी किस लिए ? अतएव हमें सदा सर्वदा मधुर वचन ही बोलना चाहिए।

अनाहूतः प्रविशति अपृष्टो बहु भाषते ।
अविश्वस्ते विश्वसिति मूढचेता नराधमः ॥

अर्थात् :– बिना बुलाए भी जाना, बिना किसी के पूछे बहुत बोलना, विश्वास नहीं करने लायक व्यक्तियों पर विश्वास करना.. ये सभी मूर्ख और अधम लोगों के लक्षण हैं। अतः अपने जीवन में हमें इन चीजों का खास ख्याल रखना चाहिए ।[22,23]

रूप यौवन सम्पन्ना विशाल कुल सम्भवा: ।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः ॥

अर्थात् :– रूप और यौवन से सम्पन्न तथा उच्च कुलीन परिवार में उत्पन्न व्यक्ति भी विद्याहीन होने पर सुगंध रहित पलाश के फूल की भाँति ही शोभा नहीं देते। विद्या अध्ययन करने में ही मनुष्य जीवन की सफलता है।

नास्ति विद्यासमो बन्धुर्नास्ति विद्यासमः सुहृत् ।
नास्ति विद्यासमं वित्तं नास्ति विद्यासमं सुखम् ॥

अर्थात् :– विद्या के सामान कोई बंधु नहीं , विद्या जैसा कोई मित्र नहीं, विद्या धन के जैसा अन्य कोई धन या सुख नहीं। अतः विद्या इस लोक में हमारे लिए सकल कल्याण की वाहक है, अतएव विद्यार्जन जरूर करनी चाहिए ।

न विना परवादेन रमते दुर्जनो जनः ।
काकः सर्वरसान् भुंक्ते विनाऽमध्यं न तृप्यति ॥

अर्थात् :-दुर्जन व्यक्तियों को परनिंदा अर्थात दूसरे व्यक्ति की निंदा किए बिना ठीक उसी प्रकार चैन नहीं आता आनंद नहीं आता है, जैसे कि कौआ सभी प्रकार के रसों का आनंद लेने के बाद भी बिना गंदगी (मैला) खाए तृप्त नहीं होता.अतः एक बुद्धिमान व्यक्ति को परनिंदा से बचना चाहिए ।

षड् दोषा: पुरूषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध: आलस्यं दीर्घसूत्रता॥

अर्थात् :-इस संसार में सम्पन्न होने अथवा उन्नति करने की प्रबल इच्छा रखने वाले मनुष्यों को इन छह आदतों का परित्याग कर देना चाहिए – (अधिक) नींद लेना अथवा अधिक सोना, जड़ता, भय, क्रोध, आलस्य और दीर्घसूत्रता अर्थात कार्यों को टालने की प्रवृत्ति. अन्यथा ये आदतें व्यक्ति के उन्नति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा बनकर उसकी कामना को कभी भी पूर्ण नहीं होने देंगे ।[21,22]

विद्यां ददाति विनयं,विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति,धनात् धर्मं ततः सुखम्॥

अर्थात् :-विद्या विद्या विनय देती है अर्थात विद्या से विनय प्राप्त होता है। विनय अथवा विनयशीलता से हमें पात्रता (लक्ष्य को प्राप्त करने की योग्यता) प्राप्त होती है। पात्रता से धन प्राप्त होता है और धन से धर्म और सुख की प्राप्ति होती है। दूसरे प्रकार से अगर हम कहें तो धन कभी भी अपात्र के हाथों में एकाएक नहीं आ जाता और अगर आ भी जाए तो नहीं रुक सकता क्योंकि धन की प्राप्ति के लिए पात्र(विनयशील) होना एक आवश्यक शर्त है। विनय शील होना ही धन प्राप्ति की पात्रता है और विनय शील होने के लिए मनुष्य को विद्यावान होना भी आवश्यक है।

परोपि हितवान् बन्धुर्बन्धु अपि अहितः पर: ।
अहितो देहजो व्याधि हितमारण्यमौषधम ॥

अर्थात् :-अगर कोई अपिरिचित व्यक्ति भी हमारी मदद करें, हमारा हित करें तो हमें उसे अपने परिवार के सदस्य की तरह सम्मान करना चाहिए मान देना चाहिए। तथा यदि अपने परिवार का सदस्य भी हमारा अहित करें तो उसे अपरिचित व्यक्ति की तरह देखना चाहिए उसे महत्व नहीं देना ही उचित है। ठीक उसी प्रकार जैसे कि जब हमारे शरीर में कोई व्याधि लग जाती है कोई रोग हो जाता है तो वैन की औषधि ही हमारे लिए हितकर होतीं हैं ।

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम् ।
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः ॥
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतम् ।
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्याविहीनः पशुः ॥

अर्थात् :– विद्या मनुष्य का सबसे गुप्त एवं विशिष्ट धन है। वह भोग देनेवाली, यश प्रदान करने वाली और सुखकारक है। विद्या गुरुओं की भी गुरु है। विदेश में विद्या अपने बंधुजनों के समान ही है। विद्या ही परम देवता है, राजा भी विद्या की ही पूजा करता है। अतः जिसके पास यह विद्याधन नहीं है वह मनुष्य पशु के ही समान है।[20,21]

द्वौ अम्भसि निवेष्टव्यौ गले बद्ध्वा दृढां शिलाम् ।
धनवन्तम् अदातारम् दरिद्रं च अतपस्विनम् ॥

अर्थात् :-दो प्रकार के लोगों की गर्दन में एक बड़ी शिला(पत्थर) बांधकर उनको गहरे जल में प्रवाहित कर देना चाहिए। पहला जो धनवान होकर भी दान नहीं करता तथा दूसरा जो निर्धन होकर भी कठिन परिश्रम करने से भागता हो।

यहां चीजों को नकारात्मक ढंग से लेने की आवश्यकता नहीं है। इस सुभाषित का मतलब इतना सा है कि एक निर्धन व्यक्ति को, धन हीन व्यक्ति को कठोर श्रम करना चाहिए ताकि उसे धन की प्राप्ति हो, जो कि जीवन जीने के लिए बहुत आवश्यक तत्व है, तथा धनवान व्यक्ति जब दानशील होगा तो उससे समाज में जो कमजोर लोग हैं उनकी सहायता भी होगी और धनवान व्यक्ति की ख्याति भी बढ़ेगी।

सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात न ब्रूयात सत्यं अप्रियम।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात एष धर्म: सनातन:॥

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

अर्थात् :– हमें सत्य बोलना चाहिए, प्रिय बोलना चाहिए परन्तु अप्रिय लगने वाला सत्य नहीं बोलना चाहिये। प्रिय लगने वाला असत्य भी नहीं बोलना चाहिए, यही धर्म है। इस श्लोक(सुभाषित) का अर्थ यही है कि हमारा व्यवहार ही हमारे सामाजिक जीवन में, हमारे पारस्परिक संबंधों में काफी अहम भूमिका निभाता है। यदि हमारा स्वयं का रवैया किसी के प्रति अथवा किसी और का रवैया हमारे प्रति घृणायुक्त और दोषपरक होगा, तो इससे हमारे बीच शत्रु भाव आ जायेगा। यदि दृष्टि एवं व्यवहार प्रेम मय होगा तो संबंध सुंदर सजीव और मित्रवत हो जाएगा.अर्थात व्यवहार ही हमारे सामाजिक संबंधों का मूल है।[20]

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः ।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा ॥

अर्थात् :-जो माता-पिता अपने संतान की शिक्षा का प्रबंध नहीं करते उन्हें नहीं पढ़ाते हैं। वह अपने संतानों के लिए शत्रु के समान हैं, क्योंकि उनकी विद्याहीन संतान को समाज में यथोचित आदर नहीं मिलेगा जिस प्रकार हंसों के बीच में बगुले का सत्कार नहीं होता ।

अपने सीमित ज्ञान से हमने विद्यार्थियों के लिए संस्कृत के उत्तम श्लोकों का चयन किया है। हमने पूरी कोशिश की है कि सीमित शब्दों में आप तक सारगर्भित श्लोकों एवं उनके भावानुवाद आप तक पहुंचाई जाए । इस लेख में संसोधन हेतु सुझाव वा इस लेख पर अपने विचार नीचे कमेंट बॉक्स में लिख कर हम तक जरूर पहुंचाए ।

यदि कुछ और श्लोक आपकी नजर में विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए उपयुक्त हो तो कृपया उन्हें भी नीचे कमेंट बॉक्स में लिखिए... हम उसे आपके नाम के साथ अपडेट कर देंगे । आने वाला समय आपके जीवन में शुभ हो इसी शुभकामना के साथ .[23]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. Mascaró, Juan (2003). The Bhagavad Gita. Penguin. पपृ° 13 , ff. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-0-14-044918-1. The Bhagawad Gita, an intensely spiritual work, that forms one of the cornerstones of the Hindu faith, and is also one of the masterpieces of Sanskrit poetry. (from the backcover)
2. ↑ Besant, Annie (trans) (1922). The Bhagavad-gita; or, The Lord's Song, with text in Devanagari, and English translation. Madras: G. E. Natesan & Co. प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः ॥ २० ॥ Then, beholding the sons of Dhritarâshtra standing arrayed, and flight of missiles about to begin, ... the son of Pându, took up his bow,(20) हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते । अर्जुन उवाच । ...॥ २१ ॥ And spake this word to Hrishîkesha, O Lord of Earth: Arjuna said: ...
3. ↑ Radhakrishnan, S. (1948). The Bhagavadgītā: With an introductory essay, Sanskrit text, English translation, and notes. London, UK: George Allen and Unwin Ltd. पृ° 86. ... pravyite Sastrasampate
dhanur udyamya pandavah (20)
Then Arjuna, ... looked at the sons of Dhrtarastra drawn up in battle order; and as the flight of missiles (almost) started, he took up his bow.
hystkesam tada vakyam
idam aha mahipate ... (21)
And, O Lord of earth, he spoke this word to Hrsikesha (Krsna): ...
4. ↑ "Comparative speaker's strength of scheduled languages -1971, 1981, 1991 and 2001". Census of India, 2001. Office of the Registrar and Census Commissioner, भारत. अभिगमन तिथि 31 दिसम्बर 2009.
5. ↑ "'The Old Vedic language had its origin outside the subcontinent. But not Sanskrit.'".
6. ↑ Sagarika Dutt (2006). India in a Globalized World. Manchester University Press. p. 36. ISBN 978-1-84779-607-3.
7. ↑ Gabriel J. Gomes (2012). Discovering World Religions. iUniverse. p. 54. ISBN 978-1-4697-1037-2.
8. ↑ अमेरिकी पत्रिका (साइंटिफिक अमेरिकन) का दावा- संस्कृत मंत्रों के उच्चारण से बढ़ती है याददाश्त (जनवरी २०१८)
9. ↑ Is Sanskrit the most suitable language for natural language processing?

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 12, December 2022 |

10. ↑ Guide to OCR for Indic Scripts: Document Recognition and Retrieval (edited by Venu Govindaraju, Srirangaraj Ranga Setlur)
11. ↑ We should thank Sanskrit for the 21st century
12. ↑ Tracing the Trajectory of Linguistic changes in Tamil: Mining the corpus of Tamil Texts
13. ↑ 'Sanskrit has had profound influence on world languages'
14. ↑ Sanskrit's Influence on Khmer
15. ↑ Sanskrit had an influence on Chinese language
16. ↑ How Sanskrit Language Is Associated With The Tibet and Xinjiang?
17. ↑ Jan Gonda (1975), Vedic literature (Saṃhitās and Brāhmaṇas), Otto Harrassowitz Verlag, ISBN 3-447-01603-5
18. ↑ Teun Goudriaan, Hindu Tantric and Śākta Literature, Otto Harrassowitz Verlag, ISBN 3-447-02091-1
19. ↑ Dhanesh Jain & George Cardona 2007.
20. ↑ Hartmut Scharfe, A history of Indian literature. Vol. 5, Otto Harrassowitz Verlag, ISBN 3-447-01722-8
21. ↑ Keith 1996.
22. ↑ Duncan, J.; Derrett, M. (1978). Gonda, Jan (संपा°). Dharmasastra and Juridical Literature: A history of Indian literature. 4. Otto Harrassowitz Verlag. आई°ऍस°बी°ऍन° 3-237-01519-5.
23. ↑ Keith 1996, ch 12.
24. ↑ Olivelle, Patrick (31 January 2013). King, Governance, and Law in Ancient India. Oxford University Press. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-0-19-989182-5.

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 7.580

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com